Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 2 | Issue : 12 | Dec 2016



NEETI SHIKSHA VA PRAGYA (WISDOM)

नीति शिक्षा व प्रज्ञा (विज्डम)

Priyanka Thakkar

Ph.D. Student, J.J.T. University, Jhunjhunu, Rajasthan, India.

ABSTRACT

विश्वव्यापी आतंकवाद, शस्त्रीकरण, मार–काट, हिंसा, भ्रष्टाचार, अमीरी–गरीबी के मध्य असह्य चौड़ी खायी, बेरोजगारी आदि समस्याओं की जड़ जानने, इन समस्याओं को समाप्त करने व फिर से उत्पन्न नहीं होने के उपाय जानने, गांधी की नीति शिक्षा का अर्थ व वर्तमान में इसकी उपयोगिता जानने, गेरा (जी.ई.आर.ए.) की इन्दौर टीम द्वारा प्रो. बी. के. पासी के दिग्दर्शन में विकसित प्रज्ञा (विज्डम) के चार स्तम्भ (पिलर्स) का अर्थ जानने, तथा गांधी द्वारा सुझायी गयी नीति शिक्षा और प्रज्ञा के उक्त चार पिलर्स/स्तम्भ में समानता ज्ञात करने हेतु यह शोध कार्य किया गया है। शोध विधि दार्शनिक व गुणात्मक है। शोधिका ने पाया कि वर्तमान समस्याग्रस्त विश्व के लिये नीति शिक्षा का अनुप्रयोग किया जाना निहायत आवश्यक है। गेरा की इन्दौर टीम द्वारा विज्डम (प्रज्ञा) के उक्त चार स्तम्भ बहुत सी उन बातों को समाहित करते हैं जो कि गांधी की नीति शिक्षा में है, और विज्डम (प्रज्ञा) के ये चार स्तम्भो के शिक्षा दिये जाने के लिये मददगार समझे जाते हैं तथा इन पर भावी शोध किये जाने को उपयुक्त पाया गया।

क्या ?

विश्वव्यापी आतंकवाद, शस्त्रीकरण, मार–काट, हिंसा, भ्रष्टाचार, अमीरी–गरीबी के मध्य असह्य चौड़ी खायी, बेरोजगारी आदि समस्याओं से सभी परेशान हैं। मानवता के स्थान पर हर जगह पशुत्व दृष्टिगोचर है। हर गतिविधि केन्द्रित है कि कैसे धन व सम्पदा अर्जित की जाये। हर माँ–बाप बच्चे को मानव बनाने में इच्छुक न होकर, उनको डॉक्टर, इन्जीनियर, व्यवसायी, वकील आदि पैसे कमाने की शिक्षा दिलाने में ही व्यस्त है। सभी में एक दूसरों का शोषण करने की प्रवृत्ति है। विश्व के गिने–चुने लोग विश्व के अधिकांश धन पर कब्जा किये हुये हैं, और दूसरे सभी उन जैसा बनने की इच्छा रखते हैं। क्या शिक्षा इन समस्याओं को दूर करने में सफल/समर्थ नहीं है ? यदि समर्थ है, तो ये समस्यायें क्यों उत्पन्न हुई ? शिक्षा विश्व भर में दी जा रही है, तो समस्या उत्पन्न होने का कारण क्या शिक्षा के नाम का, गुण का व विशेषताओं का दुरुपयोग होना नहीं है ? क्या कारण हैं, इन स्थितियों के ? क्या हल है इन समस्याओं से मुक्ति पाने का ?

क्यों ?

मस्तिष्क को प्रकृति की सहायता करने व इसके कार्य को संपादन करने की भूख है। सीखना जीवन के स्वाभाविक विकास का एक भाग है। सीखने का उद्देश्य है, बच्चों में प्रकृति के साथ एकात्मकता/ अखंडता के भाव की बुनियाद रखना। अपने पास–पड़ोस/ परिवेश से बच्चे को अवगत/ परिचित/ जागरुक होना चाहिए (जैसे, इर्द–गिर्द के पेड़, पक्षी व पशु)। दिमाग महरूम/ वंचित होता है, यदि बाहरी जगत से उदासीन/ विरक्त हो। आजकल सीखने के लिए किताबों पर केंद्रित रहते हैं। इर्द–गिर्द/ पास–पड़ोस परिवेश में निःशुल्क व सहज उपलब्ध ज्ञान की उपेक्षा करते हैं। प्रत्येक दिवस नई–नई समस्याएं उत्पन्न होती है और लोग उनके हल को ढूंढने में व्यस्त हो जाते हैं, किंतु यह सोचने की जहमत मोल नहीं लेते हैं कि यह समस्याएं क्यों व कैसे उत्पन्न होती हैं। समस्या की जड़–मूल कारण के बारे में सोचते नहीं हैं। यदि समस्या/ बीमारी के कारण को पहचान लिया जाए और हटा दिया जाए, तो समस्या कभी उत्पन्न ही नहीं होंगी। प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण किए बिना उनका दोहन किया जाता है।

वर्तमान में उत्पन्न होने वाली समस्याओं व संकटों पर नजर डाले तो विदित होता है कि संकट का मूल कारण प्रज्ञा (विज्डम) बिना विज्ञान है। विज्ञान ज्ञान और अधिक ज्ञान तक सीमित है। संकट का कारण है कि सामाजिक विज्ञान को पढ़ाते हैं, किंतु सामाजिक दर्शन नहीं पढ़ाते; तकनीकी ज्ञान को बांटते हैं, किंतु मानवता नहीं; सुविधाओं व अधिकार का ज्ञान तो प्राप्त किया जाता है, किंतु उत्तरदायित्व का नहीं।

समाज में प्रज्ञा प्राप्ति की गति से अधिक गति से विज्ञान द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाना खतरनाक है।

आधुनिक समाज हाइटेक (उच्च प्रौद्योगिकी) तत्काल स्व–संतुष्टि व स्व–आनंद प्राप्त करने का समाज है। इस प्रकार के समाज के पास प्रज्ञा के लिए कोई समय नहीं है। नए उपभोक्ता बाजार व अनियंत्रित मुनाफा, परमाणु हथियार, मानव प्रतिरुपण, अंतरिक्ष दूरदर्शन, प्रदूषित कारखाने, पश्चिमी उपभोग व अपव्यय स्तर, व्यवहार में भ्रष्टाचार आदि से आधुनिक समाज की प्रगति समझी जाती है। आधुनिक लोग मानते हैं कि पारंपरिक प्रज्ञा आधुनिक प्रगति में बाधक है और इन बाधाओं को दूर करने के उपाय बताते हैंः– परंपरागत संस्कृति मिटाना; ज्ञान प्रणाली मिटाना; पिछड़ों व अबोध को उनके अपने विमुख तरह से शिक्षित होने व जीने के लिए छोड़ देना। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में स्थानीय बुद्धिमान व्यक्तियों, विवेकी/ ज्ञानपूर्ण भाषाओं, बुद्धिमत्तापूर्ण रीतियों, औपचारिक/ अनौपचारिक स्कूली संस्थाओं के ढांचे से जानबूझकर बाहर रखी गई भारतीय बौद्धिक संस्थाओं को कोई स्थान नहीं है; और इनका कोई आदर नहीं है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली द्वारा आज की विदेशी शिक्षा पद्धतियों को आयातित कर व थोपकर नष्ट किया जा रहा है। मैकाले ने संस्कृत और अरबी भाषा को विवेकशून्य इतिहास, विवेक शून्य तत्व विज्ञान, विवेक शून्य भौतिकी, और विवेक शून्य धर्म शास्त्र कहा था। यशपाल प्रतिवेदन के अनुसार भारत के स्कूलों में बहुत अधिक पढ़ाया जाता है, किंतु सीखा थोड़ा ही जाता है या समझा थोड़ा ही जाता है।(ब्रोशुर; गेरा की 5वीं विश्व सभा, 2016)

कैसे ?

शिक्षा में क्रांति, समग्र क्रांति, की आवश्यकता है। विद्यमान शिक्षण ढाँचे को खत्म कर उन्हें पुनः बनाने की आवश्यकता है। एक स्पष्ट व निश्चित विचार बनाए जाने की आवश्यकता है जोकि मानव को जीवन के मूल्य को महसूस कराने में सहायक हो; जोकि यह बताये कि कैसी शिक्षा प्रणाली का प्रयोग करें जो विश्व को अधिकतम संभव प्रगति करने में सहायक हो। क्रांति में शामिल हैः व्यक्तिगत, सामाजिक, वैश्विक, पर्यावरणीय आदि जीवन की समस्याओं को समझना, उनका आलोचनात्मक अध्ययन करके उनके संभावित हल सुझाना; उनके हल करने के कार्य व नीतियों को सुझाना; उनके हल करने के राजनीतिक कार्यक्रम तथा जीवन दर्शन को प्रस्तुत करना। इस प्रकार शैक्षिक कार्य एक प्रकार नागरिक व सामाजिक सेवा है, और इस कारण यह उचित है कि शिक्षा प्रदायक व विधायक जनता को डायलॉग/ वार्ता व विवेक के द्वारा शिक्षा प्रदान करें; न कि सिर्फ जनता का अध्ययन करें। इस प्रकार शिक्षण संस्थाएं अधिक फलप्रद, सहानुभूतिपूर्ण, सामान्य जन केंद्रित व व्यवहारिक होंगी और आर्थिक रूप से अधिक प्रभावी होंगी।(ब्रोशुर; गेरा की 5वीं विश्व सभा, 2016)

प्रो. बी. के. पासी के मार्गदर्शन में संवाद (डायलॉग) विधि से उत्पन्न विज्डम (या प्रज्ञा) की प्राप्ति हेतु आवश्यक चार पिलर्स (स्तम्भ)

गेरा (जी.ई.आर.ए.) की इंदौर टीम नें प्रोफेसर बी के पासी के अगुवाई में संवाद (डायलॉग) विधि से वास्तविक ज्ञान अर्थात् (विज्डम या प्रज्ञा) के प्राप्ति हेतु प्रत्येक व्यक्ति में चार विशेषताओं का और समस्त चारों का एक साथ होना अपरिहार्य पाया है। और चारों विशेषताओं को बच्चों और लोगों में बनाए जाने की शिक्षा देने/ सिखाने का सुझाव दिया है। क्योंकि इन चार विशेष बातों को सीखे लोगों के समुदाय में विश्व में व्याप्त अवाँछित समस्याएं उत्पन्न नहीं हो सकती हैं। यह चार विशेषताएँ, जिन्हें प्रज्ञा/ विज्डम के चार स्तंभ/ पिलर्स से भी संबोधित किया गया है, इस प्रकार हैंः करुणा (कम्पैशन), अहंकार–विहीनता (इगोलेसनेस), प्राकृतिक समन्वय (नेचुरल बैलेंस) तथा ज्ञान स्त्रोत (कन्वेन्सन्स ऑफ नॉलेज)। इन का संक्षिप्त वर्णन निम्न है।

करुणा (कम्पैशन): करुणा का अर्थ है, दूसरों के दुःख में शामिल होना और उनको दुःखों/ पीड़ा से मुक्ति दिलाने हेतु लगना।

अहंकार–विहीनता (इगोलेसनेस): अहंकार का अर्थ है, व्यक्ति में ''मैं'' का भाव उत्पन्न होना। अहंकार के कारण व्यक्ति कार्य करने को उद्यत होता है। अहंकार व्यक्ति को स्व–केंद्रित करता है। अतः व्यक्ति में ''मैं'' की भावना न होने व उसका स्व–केंद्रित न होने की स्थिति को अहंकार–विहीनता कहते हैं।

प्राकृतिक समन्वय (नेचुरल बैलेंस): व्यक्ति को प्राकृतिक समन्वय की स्थिति में तब कहा जाता है, जब वह दुःख, हर्ष, क्रोध इत्यादि को काबू में रखे।

ज्ञान स्त्रोत (कन्वेंशन्स ऑफ नॉलेज): ज्ञान का अर्थ मात्र सूचनाओं के एकत्रण का; तथ्यों के एकत्रण का; किसी विशेष विषय के ज्ञान का (जैसे, गणित, विज्ञान, कंप्यूटर साइंस, इंजीनियरिंग, चिकित्सा शास्त्र, कानून, वाहन चालन, आदि); स्थानों की सूचनाओं का; इतिहास, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र को जानने का; किन्हीं समस्याओं/ परिस्थितियों से अवगत होने आदि से नहीं है। ज्ञान का वास्तविक अर्थ है, प्रज्ञा प्राप्ति। यह औपचारिक (फॉर्मल), अनौपचारिक (इनफॉर्मल), औपचारिकेत्तर (नॉन–फॉर्मल) तीनों तरह के मिश्रित तरीकों से प्राप्त होती है।

प्रज्ञा (विज्डम) प्राप्ति की सार्वकालिक, सार्वभौमिक व प्राचीन विधि

मानव का सबसे पहला फर्ज है कि वह स्वयं को समझे और इस प्रकार प्रथम व सच्चा ज्ञान प्राप्त करे। मानव को यह बात माननी व जाननी चाहिए कि उसका शरीर है और इस शरीर के द्वारा ही समस्त कार्य व विचार आदि संपन्न होते हैं। शरीर को क्षेत्र और इस शरीर को तत्वरूपेण जानने वाले को क्षेत्रज्ञ कहते हैं। तो क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का ज्ञान ही वास्तविक व कारगर ज्ञान है। व्यक्ति को यह ज्ञान होना चाहिए कि इस शरीर में है क्या। शरीर में हैं:– (1) अग्नि, जल, थल, वायु व आकाश नामक पाँच महातत्व/ पदार्थ या महाभूत। यह पाँच महातत्व अनेक अनुपात इत्यादि से मिलकर अनेक उपतत्व/ उपपदार्थ आदि बनाते हैं और जगत में होते हैं। (2) अहंकार, (3) बुद्धि (विचारशीलता, तर्क) (4) प्रकृति का अव्यक्त पहलू, (5) कर्म करने के साधन रूप में पाँच कर्मेंद्रियां (हाथ, पैर, वाणी, उपस्थ व गुदा) तथा पाँच अनुभव ग्रहण करने वाली इंद्रियां, ज्ञानेंद्रियां (कान, नाक, नेत्र, त्वचा व रसना), (6) मन, (7) इंद्रियों के द्वारा अनुभव होने वाली पांच बातें (रूप, रस, गंध, स्पर्श, व ध्वनि), (8) इच्छा (कामना व वासना), (9) द्वेष (क्रोध), (10) सुख, (11) दुःख, (12) संघात (अनेक खंडो का योग), (13) चेतना (बुद्धिमत्ता), (14) धृति तथा (15) शौर्य (इच्छाशक्ति)। इस प्रकार समस्त वस्तुगत ब्रह्मांड क्षेत्र है जिसमें हम अपना मन, शरीर, इंद्रीय–तंत्र सब कुछ सम्मिलित करते हैं और इन सब से अलग केवल शुद्ध चैतन्य है, विशुद्ध चेतना या बुद्धिमत्ता, जो कि ब्रह्मांड के केंद्र में स्थित है। (13/1 से 13/6; भगवद्गीता) शरीर व इंद्रियों की उत्पत्ति में प्रकृति कारण है तथा सुख–दुःख आदि के अनुभव में पुरुष कारण है। पुरुष, जो प्रकृति में स्थित है, प्रकृति के गुणों का अनुभव करता है तथा शुभ व अशुभ गर्भाशयों में उसके जन्म का कारण उसकी गुणों के प्रति आसक्ति है। उपरोक्त ज्ञान निम्न के द्वारा प्राप्त होता है:– (1) विनम्रता, (2) दम्भहीनता, (3) अहिंसा, (4) सहनशीलता, (5) सरलता, (6) गुरुसेवा, (7) शुद्धि, (8) स्थिरता, (9) आत्मनियंत्रण, (10) इंद्रियों के विषयों के प्रति अत्यधिक आसक्ति का त्याग, (11) अहंकार का आभाव, (12) जन्म, मृत्यु, वृद्धावस्था, रोग व शोक के दोषों पर चिंतन/ विचार, (13) अनासक्ति, (14) पुत्र, पत्नी, घर व अन्य के साथ स्वयं की पहचान न करना, (15) प्रिय व अप्रिय घटित होने पर सम बुद्धि रखना, (16) अपृथकत्व के योग द्वारा अनादि शक्ति (सत्य/ ईश्वर/ खुदा आदि) के प्रति अनन्यभक्ति रखना, (17) एकांत स्थानों के प्रति झुकाव, (18) स्त्री–पुरुषों के समाज से निरंतर जुड़े रहने के प्रति अरुचि रखना, (19) आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति निरंतर मनोनियोग रखना, तथा (20) वास्तविक ज्ञान का प्रयोजन समझना। इनके बिना जो प्राप्त हो, वो ज्ञान नहीं बल्कि अज्ञान है। (13/7 से 13/11; भगवद्गीता) उक्त प्रकार के ज्ञान हासिल होने के बाद ही व्यक्ति प्रज्ञा (विज्डम) प्राप्त करने की ओर अग्रसर होता है, और प्रज्ञा प्राप्ति के बाद ही प्रज्ञावान कहलाता है।

प्रज्ञा (विज्डम) प्राप्ति में सहायक गांधी की नीति शिक्षा

गांधी ने अपनी हिन्द स्वराज पुस्तक के अध्याय–18 में शिक्षा नामक अध्याय में हर एक को नीति शिक्षा दिये जाने की अपरिहार्य आवश्यकता जाहिर की थी। नीति का अर्थ सत्य को पहचानने, जानने, मानने व इसको प्राप्त करने के मार्ग पर चलते रहने से है। सत्य का अर्थ सृष्टि से, सृष्टि निर्माता से व सृष्टि परिचालन के नियमों से है। सत्य ही ईश्वर, खुदा आदि है। सत्य के मार्ग पर चलने हेतु कुछ प्रमुख आचरण बताये हैं। ये आचरण या नियम इस प्रकार हैं:– (1) अहिंसा, यानि सर्वव्यापी व सार्वकालिक जीव–निर्जीव से प्रेम। इसमें अछूतपन मिटाना तथा नम्रता निहित हैं। (2) सत्य से निकलते हैं नियमः अस्तेय, अपरिग्रह व अभय। इसी के अन्तर्गत गांधी द्वारा सुझाये गये ब्रह्मचर्य, स्वदेशी व सर्वधर्म समभाव नामक नियम को भी समझा जाता है। (3) अस्वाद, (4) जात–मेहनत।

इन नियमों के पालन का अर्थ है कि व्यक्ति सद्व्यवहार करने वाला, सदाचार करने वाला, सद्विचार करने वाला, साहसी, कष्ट सहनशील, संयमी, सबसे पूरा का पूरा प्रेम करने वाला, सबको समान व अपने जैसा एक ही अनादिशक्ति से उत्पन्न व्यक्ति माननेवाला, पशुबल के बजाय आत्मबल को पहचानकर जीवन में उपयोग करने वाला, दूसरों के लिये आत्मबलि देने वाला, अनादिशक्ति पर श्रद्धा रखने वाला, द्वेषरहित, घृणारहित, जीव–निर्जीव की सेवा को अपने जीवन का एकमात्र ध्येय समझने वाला, कर्मेन्द्रियों व ज्ञानेन्द्रियों व मन को वश में रखने वाला, धैर्ययुक्त, क्षमाशील, इच्छाओं को न्यूनतम–से–न्यूनतम करने वाला, उत्साह व उमंगों पर काबू रखने वाला संयमी होता है।

निष्कर्ष

इस शोध से निष्कर्ष यह निकलता है कि वर्तमान में गांधी की दृष्टि की नीति शिक्षा को दिया जाना आवश्यक ही नहीं बल्कि अपरिहार्य है। इसे व्यक्ति वास्तविक ज्ञानी, प्रज्ञावान, कर्म–ज्ञान–भक्तियोगी बनेगा। इस प्रकार की शिक्षा से वर्तमान में फैली समस्याओं का अन्त होगा और ऐसी समस्याओं की आगे उत्पन्न होने की सम्भवना भी नहीं रहेगी। प्रो. बी. के. पासी के दिग्दर्शन में गेरा (जी.ई.आर.ए.) संस्था की इन्दौर टीम में जो प्रज्ञा (विज्डम) के चार स्तम्भ/पिलर्स सुझाये हैं, वो गांधी द्वारा प्रस्तावित नीति शिक्षा से उत्पन्न होने वाले अनेक फायदों को देने वाले हैं। हांलॉकि विज्डम (प्रज्ञा) के उक्त पिलर्स की संख्या चार हो या कुछ और, के बारे में शोध किये जाने की आवश्यकता है। इस बात पर भी शोध किया जाना उचित समझा जाता है कि विज्डम (प्रज्ञा) के उक्त चार, या अन्य संख्या में, पिलर्स/स्तम्भ में क्या श्गुण या विोषतायें आदि निहित होंगी।

आभारः– शोधार्थी प्रो. बी. के. पासी व डॉ. सुभाषिनी पासी द्वारा दिये गये उत्साह, दिग्दर्शन, सलाह व स्नेह के प्रति आभार तो मानती ही है, साथ में उनके प्रति स्वयं को ऋणी मानती है।

सन्दर्भः–

1 Gandhi, M.K. (1949). Hind Swaraj. Ahmedabad: Navjeevan Prakashan Mandir.
2 Gandhi, M.K. (1949). Satya Ke Prayog. Ahmedabad: Navjeevan Prakashan Mandir.
3 Gandhi, M.K. (1958). Mangal Prabhat. Ahmedabad: Navjeevan Prakashan Mandir.
4 Gandhi, M. K. (1963). Gram Swarajya. Ahmedabad: Navjeevan Prakashan Mandir
5 Gandhi, M.K. (2011). Sarvodaya. New Delhi: Sasta Sahitya Mandal.
6 Gandhi, M.K. (2014). Buniyadi Siksha. Varanasi: Sarva Seva Sangh- Prakashan.
7 Mishra, M.K. (2008). Sociological Foundation of Education. Patna: Nalanda Open University,
8 Mishra, M.K. (2008). Sociological Foundation of Education. Patna: Nalanda Open University.
9 Passi, B. K. & Thakkar, Priyanka (2012). Dialogue and Re-dialogue As Shifting Paradigm In Educational Research. Proceedings of THIRD PEOPLE EDUCATION CONGRESS; No.19-23 2012; Ahmedabad: Guj. Vidyapeeth,
10 Passi, B. K., Thakkar, Priyanka & Gupta, M.C. (2012). Ill-Directed Education in India. Guj. Vidyapeeth, Ahmedabad: Proceedings of THIRD PEOPLE EDUCATION CONGRESS; No.19-23 2012;
11 Passi, B. K., Thakkar, Priyanka & Gupta, M.C. (2013). First Deserve, Then Desire. Proceedings of 'World Conference of GERA: T N Centre, Kathmandu, Nepal: 'Gandhian Thought and Globalisation' 2-3 Sep 2013,
12 Shastri, D. (2011). Geeta Ka Niti Shastra. New Delhi: Sasta Sahitya Mandal.
13 Shikshashastra. (2016). New Delhi: Danika Publishing Company.
14 Shivdayal. (2009). Sarvangeen Vyatitva Vikas, Vol.2. New Delhi: Sasta Sahitya Mandal.
15 Shrimadbhagvadgeeta. (2000). Shrimadbhagvadgeeta. Gorakhpur: Geeta Press.
16 Sujata (2012). Gandhi Ke Naitikta. Varanasi: Sarva Seva Sangh Prakashan,
17 Thakkar Priyanka, (2014). Environmental Education To Teacher Trainees/Students: Why & How? International Journal of Renewable Energy Exchange; ISSN 2321-1067; Vol.3 Issue 1; PP. 172-179.
18 Thakkar, Priyanka (2015). Lack of Evaluation of Effectiveness of Teachers of Disabled and Non-disabled Children in India. The International Research Journal of Social Sciences and Humanities, Vol..4, No.2, February, pp.1-13; ISSN 2320-4702.
19 Thakkar, Priyanka (2015). MANDATORY EDUCATION INVARIABLY REQUIRES ENCYCLOPEDIC EDUCATION SYSTEM AND GOVERNMENT LEADERSHIP REVOLUTIONIZING IT. Research Link, 132A(2), Vol-XIV(1), March 2015, [ISSN-0973-1628 (An International, Registered & Referred Monthly Journal)].
20 Thakkar, Priyanka (2015). Swachh Bharat [clean india] Mission – an analytical study. National Conference on "Challenges & Opportunities towards Clean & Green India", JJTU University, Jhunjhunu, Rajasthan-12-14 March 2015.
21 Thakkar, Priyanka (2016). 'Hind Swaraj' ke 'Shiksha' Addhyay va 'Mangal Prabhat' ke pariprekshya me 'NEETI SIKSHA' sankalpana va uska samadhan: Gunatmak va Darshnik Addhyan. Ph.D. Thesis Submitted in Oct-2016: J.J.T. University, Jhunjhunu (Rajasthan; India).